प्रिय पृथ्वी

अव्वैयर

चित्राँकनः मुरली नागपुझा

तमिल भाषा से अनुवादित

आई लव इंडिया

कथा की 300एम थिंकबुक

प्रिय पृथ्वी!

हरे खेत
या जंगल

ऊँचे पहाड़ या घाटियाँ
हर तरह से,

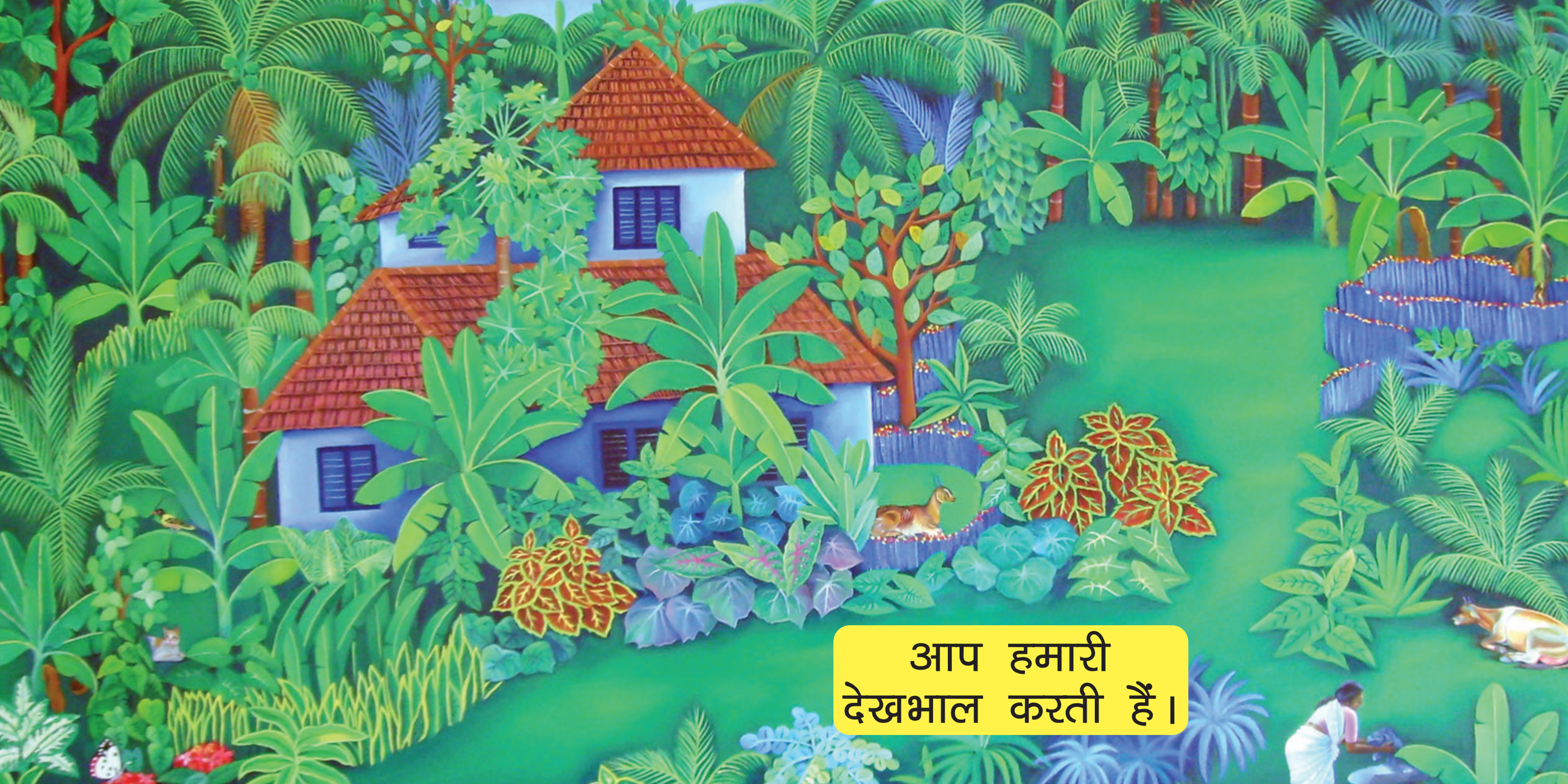

आप हमारी
देखभाल करती हैं।

जब हम आपकी
देखभाल करते हैं!

प्रिय पृथ्वी,
आप युगों–युगों तक जियें।

TADAA!

1

सोचो!

एक प्रसिद्ध लेखक ने कहा था, "अगर तुम वही किताबें पढ़ते हो जो बाकी सब पढ़ रहे हैं, तुम बस वही सोच सकते हो जो बाकी सब सोचते हैं।" क्या वे सही थे?

2

पूछो!

तुमने अव्वैयर की 25 शब्दों की कविता से कुछ अलग सीखा? अव्वैयर की 'बड़ी सोच' में खास क्या है?

3

बात करो!

अगर पृथ्वी को खुश करने के लिए तुम्हें कोई एक काम करना हो, तो वह क्या होगा?

4

अब करो!

पेड़ पृथ्वी माँ के बच्चे हैं। पृथ्वी माँ पेड़ों के द्वारा हमारा ख्याल रखती हैं। क्या तुम किसी पेड़ का ख्याल रख सकते हो? और क्या तुम पृथ्वी को "धन्यवाद" कह सकते हो?

5

हासिल करो!

अव्वैयर की एक और कविताः

यदि हमारी धरती पर
एक दयालु बच्ची भी हो,
तो उसके प्यार से,
सभी पर बरसात होगी।

क्या तुम वह बच्चे बन सकते हो जो सभी के लिए बारिश लाएगा?

दयालु बनने के आसान तरीके जानने के लिए अगले पेज पर चलो!

दयालु बनने के ९ प्यारे तरीके

हम दयालु बन सकते हैं ...

- दूसरों की मदद करके
- सबके लिए खुश हो कर
- सबसे अच्छी बातें बोल कर
- दोस्तों की हौसला अफ़ज़ाई करके
- प्रेम से सबकी बात सुनकर
- मुस्कुरा कर
- बारी - बारी से बाँट कर
- दूसरों का ध्यान रख कर
- अच्छे संस्कारों से

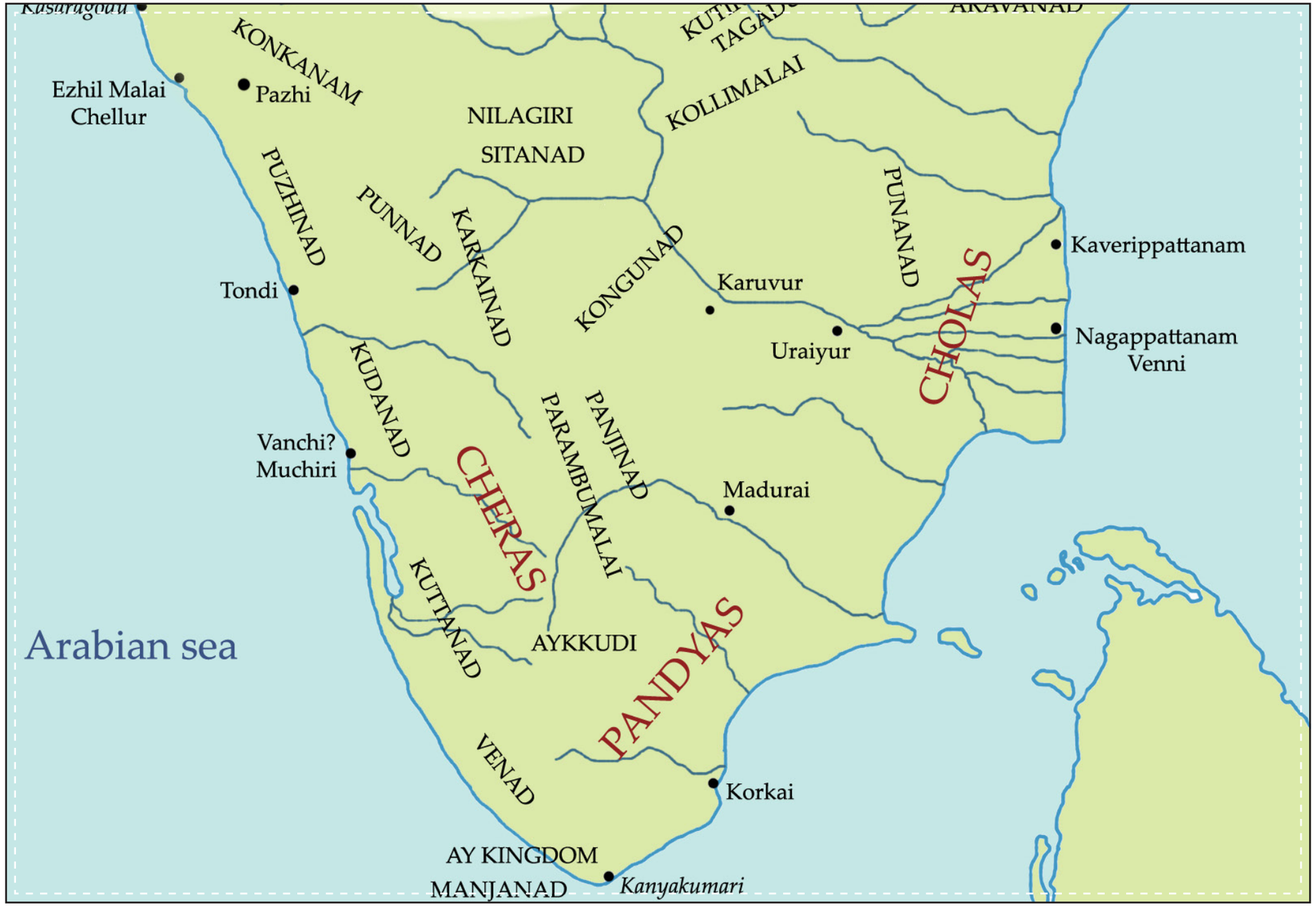

पढो!
समझो!
बात करो!

बहुत समय पहले

. करीब 2500 साल पहले दक्षिण भारत को तमिलाकम कहते थे।

. तमिलाकम के राजा बहुत समझदार थे।

. उन्हें नृत्य, संगीत, कविताएँ, और ललित कलाएँ बहुत पसंद थे।

. वे अपने यहाँ बहुत से कवियों को बुलाते थे।

जब ४०० कवि गाये

. इतिहासकार कहते हैं कि तीन 'संगम' हुए थे।

. इन संगमों में बहुत से कवि इकठ्ठा होते थे।

. इस समय में, तमिल में कविता लिखने वाले ४०० (400) कवि थे।

. राजा कई कवियों से सलाह लेते थे।

एक कवि थी, अव्वैयर नाम कीं

- अव्वैयर एक वृद्ध और समझदार कवि थी।
- वह एक कवियित्री थीं।
- उन्होंने कई राजाओं और आम लोगों को सलाह दी। सभी उनकी बात सुनते थे।
- कुछ लोग कहते हैं वे 2300 वर्ष पहले इस पृथ्वी पर थीं।
- कई कहानियों के अनुसार, अव्वैयर ने नंगे पाँव चलते हुए दक्षिण भारत के कई गाँवों में यात्रा की।
- वे किसानों और उनके परिवारों के साथ रहती थीं। उनके गीतों को सुन कर सभी खुशी से नाच उठते थे।

भगवान कहाँ है?

अव्वैयर एक पुराने मंदिर में आराम कर रही थीं। उनके पैर भगवान शिव की मूर्ति की ओर थे। देवी पार्वती को यह देख कर क्रोध आ गया।

उन्होंने अव्वैयर को डाँटा। "तुम भगवान का अनादर कैसे कर सकती हो!" अव्वैयर पहले चुप रहीं। फिर कहा, "मुझे क्षमा कीजिये माँ। आप मुझे वह दिशा बता दीजिये जहाँ भगवान नहीं हैं। मैं अपने पाँव उधर कर लूंगी।"

माता पार्वती ने कहा, "तुम सही कहती हो। भगवान सब जगह हैं!"

सौजन्य से: National Geographic, JSTOR Wikipedia

गीता धर्मराजन बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह *टारगेट* पत्रिका और *पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय* की पत्रिका *पेन्सिलवेनिया गज़ेट* की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

मुरली नागापुझा केरेला के नागापुजा गाँव में बड़े हुए। उन्हें बचपन से ही अपने घर के चारों ओर लम्बी हरी घास बहुत पसंद थी। इसलिए उनकी कला में हरियाली दिखाई देती है। इनके काम की कई प्रदर्शनियाँ भारत और विदेश में हुई हैं।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री**, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

गीता धर्मराजन द्वारा बच्चों के लिए अनुवादित इस कविता का अंग्रेजी अनुवाद

पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2020, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्रांकन कृति स्वामित्व © मुरली नागापुजा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।
कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।
ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

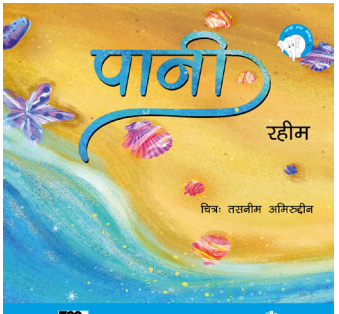

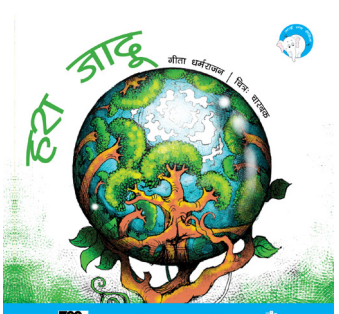

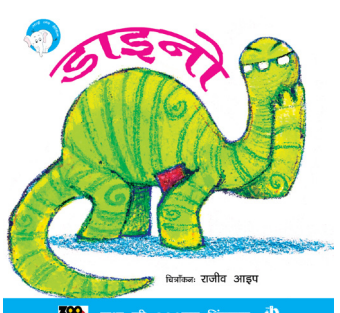

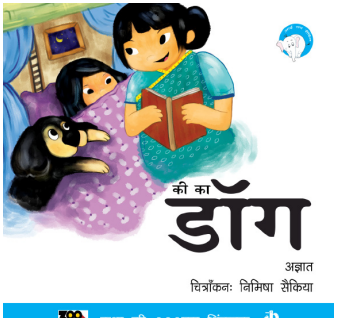

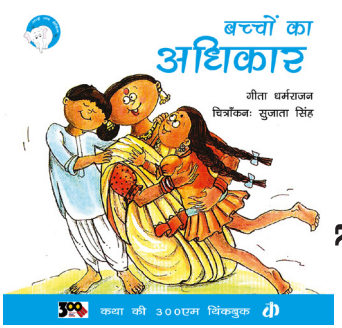

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx

इसकी एक श्रृंखला में